सम्पादकीय का शेष.....

और अपनाना पड़ेगा पुरुषार्थ को, विद्या को, योग्यता को, तभी हम लक्ष्य की ओर बढ़ पाएंगे। और यह त्याग तथा पुरुषार्थ का कार्य केवल कुछ लोगों का नहीं अपितु प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि ऋषि के बताए मार्ग पर चलते हुए संगठित होकर इस मार्ग पर बढ़ें। प्रत्येक आर्य अपना यथा सामर्थ्य समय व संसाधन आर्यों के उत्थान के लिए लगाए। अधिक से अधिक पुरुषार्थ को जीवन में इसी उद्देश्य के लिए अपनाए कि आर्यों के उत्थान के काम भी आ सके। क्योंकि हमारा आकलन भी इसी आधार पर होगा कि हम सफल हुए या असफल। असफल होने पर असफलता के कारण ढूंढ़े जाते हैं, और सफल होने पर सफलता के कारण ढूंढ़े जाते हैं। सफल व्यक्तियों का त्याग व पुरुषार्थ दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाता है।

–आचार्य सतीश

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

बिना सिद्धांतों को समझे, उन्हें धारण किए मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	(महिला सत्र) गांव कुशहेरी, गाजियाबाद, उ० प्र०	04-05अक्टू.
2.	बीठमड़ा, हिसार, हरियाणा	04-05 अक्टू.
3.	आर्यसमाज, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक, हरियाणा	04-05 अक्टू.
4.	नन्हेरा, अनन्तपुर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड़	11-12 अक्टू.
5.	आर्यसमाज, आर्य नगर, ज्वालापुर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड़	18-19 अक्टू.
6.	चौपाल, भगत सिंह पार्क, गांव करावला, दिल्ली	18-19 अक्टू.
7.	गांव राजपुर, टिलोरा, मुजफ्फरनगर, उ० प्र०	18-19 अक्टू.
8.	बहादुरपुर जाट, बिजनौर, उ० प्र०	18-19 अक्टू.
9.	वार्षिक उत्सव, आर्यसमाज, गगसीना, करनाल, हरियाणा	20-22 अक्टू.
10.	गांव चिराई, सारनाथ, वाराणसी, उ० प्र०	25-26 अक्टू.
11.	वार्षिक उत्सव, अहरोला, बिजनौर, उ० प्र०	26-28 अक्टू.
12.	डी. ए. वी. स्कुल, गया, बिहार	01-02 नव.
13.	दयानन्द भवन, सिवाह, पानीपत, हरियाणा	01-02 नव.
14.	आर्यसमाज, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक, हरियाणा	01-02 नव.
15.	गांव लक्कड़पुर, फरीदाबाद, हरियाणा	01-02 नव.
16.	उपासना कक्षा, गुरुकुल चित्तौड़ा झाल, उ० प्र०	01-02 नव.

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com व www. aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

मुजफ्फरनगर में वार्षिकोत्सव एवं जनपदीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न

आचार्य महाविद्यालय वैदिक ज्ञान गुरुकुल नंगला कबीर मुजफ्फरनगर के प्रांगण में 1 से 3 अक्टूबर 2014 ई0 को भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ।

1 अक्टुबर को प्रात: ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम आरम्भ हुआ, यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अवधेश जी ने यज्ञोपरान्त आध्यात्मिक चर्चा से श्रोताओं को उपासक बनने की प्रेरणा दी। अपराह्न व सायंकाल की सभा में व्यक्ति के कर्तव्य, गृहस्थ (परिवार) सुखवृद्धि का साधन, धर्माचरण क्यों व कैसे, सामाजिक उन्नत्ति कैसे आदि विषयों पर आचार्य अवधेश जी व्याकरणाचार्य, आचार्य हनुमत् प्रसाद जी अर्थववेदाचार्य, आचार्य कल्पना व्याकरणाचार्या आदि विद्वानों ने अपने सार गर्भित विचार रख सबको भाव विभोर किया। कार्यक्रम के दूसरे दिन गुरुकुल के संस्थापक स्वामी यज्ञमुनि जी ने अपना प्रवचन सभी को आशीर्वाद के रूप में रखा, डा. सत्यपाल सिंह जी, माननीय सांसद बागपत ने वेदों और वैदिक धर्म के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रकट कर सभी को धर्म पालन हेतु प्रेरित किया।

तीसरे दिन प्रात:काल से ही आर्यों का उत्साह दर्शनीय था। लोग अपने वाहनों , कार, मोटर साइकिल, ट्रैक्टर ट्राली, और भैंसा बुग्गी आदि से भर-भर के प्रात:काल से ही आने लगे थे, युवा आर्यों की एक टुकड़ी ने प्रात:काल ही आचार्य परमदेव मीमांसक जी के स्वागत के लिए मुजफ्फरनगर की सड़कों एवं गलियों को जय आर्य-जय आर्यावर्त के नारों से गुँजायमान कर दिया, गुरुकुल पहुँचने पर सभी आर्यों ने जय आर्य, जय आर्यावर्त के गगन भेदी नारों से आचार्य जी का स्वागत किया प्रांगण में बैठे हजारों श्रोताओं ने मौसम की प्रतिकूलता के पश्चात भी लगभग डेढ़ घंटे तक मन्त्र मुग्ध होकर आचार्य श्री का उद्बोधन सुना। बीच-बीच में प्रांगण तालियों की गड़गड़ाहट से गूँजता रहा, आचार्य जी के उद्बोधन से प्रेरित होकर हजारों आर्यों ने नियमित संध्या करके अपने परिवारों को आर्य परिवार बनाने एवं माताओं ने अपने पति, पुत्र व भाईयों को आर्य पथ पर चलाने की शपथ ली, कार्यक्रम का आयोजन आर्य नरेन्द्र जी व आर्य जगजीत जी के संरक्षण में गुरुकुल कार्यकारिणी एवं राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की जनपदीय कार्यकारिणी ने किया, कार्यक्रम का संयोजन आचार्य योगेश जी ने किया।

–जगमोहन आर्य

विशेष सूचना

आर्य उपासक सत्र पूर्व की भांति प्रत्येक माह के अन्तिम शनिवार-रविवार को आर्यसमाज, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक में आयोजित किया जाता है।

प्राथमिक सत्र में प्रशिक्षण के उपरान्त विषयों के प्रमाणीकरण के लिए व उन विषयों को और गहराई से समझने के लिए प्रत्येक आर्यगण के लिए यह सत्र आवश्यक है। इस सत्र में उपासना आदि विषयों के बारे में विस्तृत रूप में चर्चा होती है, अत: प्रत्येक आर्य इस सत्र में अवश्य सम्मिलित हो। सत्र में भाग लेने के लिए पहले से सूचना देना व पंजीकरण कराना आवश्यक है। इसके लिए आप आचार्य जितेन्द्र जी से दूरभाष न. 9416201731 पर संपर्क करें।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	06 नवम्बर	दिन-बृहस्पतिवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-अश्विनी
अमावस्या	22 नवम्बर	दिन-शनिवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-विशाखा
पूर्णिमा	06 दिसम्बर	दिन-शनिवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-रोहिणी
अमावस्या	21 दिसम्बर	दिन-रविवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-ज्येष्ठा

हमारा वैभवशाली विज्ञान

-सोनू आर्य, हरसौला, कैथल

सितम्बर माह में मंगलयान को प्रथम प्रयास में ही सफलता पूर्वक मंगल पर भेजकर हमने नया इतिहास रच दिखाया है। प्रथम प्रयास में ही मंगल ग्रह पर पहुंचने वाला भारत पहला देश बन गया है, इसी के साथ भारत अमेरिका जैसे देश जो अपनी तकनीकी का ढिंढोरा पीटा करते थे, को अन्तरिक्ष रूपी दगंल में पटखनी देकर, उनसे कई कदम आगे निकल गया है। किन्तु यह सफलता हमारे लिए नई नहीं है, अपितु हमारे यहां तो विज्ञान की एक वैभवशाली परम्परा प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है, और ऐसे कारनामे प्राचीनकाल से करके दुनियां को स्तब्ध हम करते रहे हैं। देखिए कैसे?

मंगलयान का उद्देश्य - मंगल ग्रह की सतह, संरचना, खनिज, वातावरण का अध्ययन, मीथेन (मार्स में गैसों) की मात्रा को मापने के अलावा क्या ब्रह्मांड में हम अकेले हैं आदि को जानना भी इस यान का उद्देश्य है? सतह संरचना आदि का अध्ययन एवं निर्धारण तो सत्व, तम, रज (आज के प्रोटोन, इलेक्ट्रान, न्यूट्रान) के मूल रूप में रिसर्च करने वाले ऋषि लाखों वर्ष पूर्व ही कर गए थे एवं प्रग्रही रिसर्च जीवों के बारे में स्वयं महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है ''ये सब (ग्रहों के विषय में) भूगोल लोक एवं इसमें मनुष्यादि प्रजा भी रहती है, क्योंकि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, नक्षत्र, और सूर्य इनका नाम वसु अर्थात बसाने वाले इसीलिए हैं कि इन्हीं से सब पदार्थ व प्रजा बसती है और ये ही सबको बसाते हैं। तो इनमें इसी प्रकार प्रजा होने में क्या सन्देह है, इसलिए सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है, किन्तु उनमें और हममें कुछ-कुछ आकृति में भेद होना संभव है, जैसे विभिन्न देशों के लोगों में थोड़ा-थोड़ा भेद है,'' एवं ऐसा ही मशहूर वैज्ञानिक स्टीफन विलियम हॉकिंस ने भी निश्चय किया है। मूल रूप से तो ये सिद्धान्त हमारे पास हैं कि किन्तु सूक्ष्म रूप में हम इसका अध्ययन इसलिए नहीं कर पाए, क्योंकि आजादी के बाद हमारे कुछ भ्रष्ट राजनेताओं ने हमारी प्राचीन तकनीक को नजरअन्दाज कर दिया एवं इसे कोई प्रोत्याहन नहीं दिया गया। अतः जो कामयाबी कई वर्ष पूर्व मिल सकती थी वह आज मिल पाई है। फिर भी हम यही कहेंगे कि देर आए दुरुस्त आए। आज मिलने वाली कामयाबी भी आनन्ददायक ही है। क्योंकि इसके द्वारा भी वेद एवं ऋषि दयानन्द के उपरोक्त सिद्धान्त ही विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरेंगे।

हमारा प्राचीन खगोल शास्त्र - जैसेकि उपरोक्त वर्णित है कि हमारे पास विज्ञान की श्रेष्ठ परम्परा के कुछ श्रेष्ठ आश्चर्यचकित करने वाले सिद्धान्त, ग्रहों की स्थिति एवं मार्ग, गुरूत्वाकर्षण, सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या, प्रकाश की चाल, प्रग्रही जीव आदि का विशद् वर्णन हमारे मूल ग्रन्थों वेद में सूक्ष्म रूप में उपलब्ध हैं। इसके अलावा पृथ्वी का व्यास, पृथ्वी व चन्द्रमा की दूरी, पृथ्वी व सूर्य के बीच की दूरी, ब्लैकहोल (काला धब्बा) थ्योरी आदि विश्व भर में सर्वप्रथम हमारे पूर्वजों को ज्ञात थे। शनि के सात उपग्रह एवं दिन-रात बनने का कारण वर्षों पूर्व आर्यभट्ट हमें बता चुके थे, किन्तु दुर्भाग्य हमारा यही रहा कि विदेशी एक तरफ हमारे ज्ञान स्रोतों से प्रगति करते है और दूसरी तरफ हमारे ग्रन्थ वेदों को ही गड़रियों के गीत व अन्य ग्रन्थों को काल्पनिक कहते रहे एवं हमारे विद्वान उनका अन्धानुकरण करते रहे।

आधुनिक भारतीय विज्ञान का प्रथम योद्धा भारत को आर्यसमाज ने दिया- यूं तो भारत के प्रथम अन्तरिक्ष यात्री राकेश शर्मा को कौन नहीं जानता? किन्तु उनकी पृष्ठभूमि को शायद ही कोई जानता हो। वैसे तो किसी भारतीय का अन्तरिक्ष यात्री बनना पूरे भारतवर्ष के लिए गौरव का विषय था किन्तु आर्यों के लिए यह क्षण विशेष तौर पर स्वाभिमान का स्वार्णिम विषय था। क्योंकि आर्यसमाज ने हर क्षेत्र में विद्वान्, क्रान्तिकारी एवं महापुरूष दिये हैं। यह (योद्धा राकेश शर्मा) भी उसी भट्टी से निकला था। इनके दादा पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति आर्य समाज के विख्यात उपदेशक थे। राकेश शर्मा के संस्कार उनकी देख-रेख में हुए और विचार शक्ति के अनुकुल बने। यज्ञ प्रार्थना **यज्ञ रूप प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए** इनके दादा पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति जी की ही दी हुई है।

अतः हम प्राचीनकाल से लेकर आज तक विज्ञान एवं नकनीक में किसी से पीछे नहीं रहे हैं और आज मंगलयान के द्वारा हमने यह सिद्ध भी कर दिया है कि दुनियां में हम श्रेष्ठ (आर्य) थे एवं आने वाले समय में भी होंगे। क्योंकि आज दुनियां मान रही है कि आनेवाला समय भारत में भी आर्यों का ही है। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हमारी वैदिक संस्कृति विज्ञान एवं तकनीकी पर आधारित है और तकनीकी हमारे खून में है।

ऋषि बलिदान दिवस - कंझावला, दिल्ली

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा दिल्ली द्वारा प्रति वर्ष की भांति ऋषि बलिदान दिवस 23 अक्टूबर दिपावली के दिन कंझावला ग्राम में मनाया गया। इस कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ, जिसे आचार्य सतीश जी ने संपन्न कराया व यज्ञोपरान्त यज्ञ के भौतिक लाभों की और लोगों ध्यान आकृष्ट किया। कार्यक्रम में हजारों व्यक्तियों के साथ क्षेत्र के सभी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य परमदेव मीमांसक जी द्वारा आर्यों के संरक्षण व संगठन के लिए आर्य परिवार के निर्माण पर बल दिया गया, कार्यक्रम को आचार्य राजेश जी, आचार्या इन्दिरा जी व अन्य वक्ताओं के द्वारा भी संम्बोधित किया गया। कार्यक्रम की सफलता के लिए स्थानीय आर्यों विशेषकर आर्य वरुण कराला, आर्य रविन्द्र लाडपुर, आर्य दिनेश व आर्य पंकज कंझावला द्वारा विशेष प्रयास किया गया। अन्य गणमान्य व्यक्तियों के अलावा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आर्य सत्यकाम एडवोकेट व निर्मात्री सभा के प्रान्तीय अध्यक्ष आर्य सुरेश जी भी उपस्थित थे।

अनेक स्थानों पर मनाया गया ऋषि बलिदान दिवस

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा अनेक स्थानों पर ऋषि बलिदान दिवस 23 अक्टूबर को मनाया गया। करनाल में आचार्य हनुमत्प्रसाद, कुरुक्षेत्र में आचार्य धर्मपाल जी, रोहतक में आचार्य जितेन्द्र जी, गांव राजली हिसार में आचार्य अशोकपाल जी व डॉ. बलराज, प्रधान स्थानीय आर्यसमाज, गांव बिठमडा हिसार में आचार्य दयानन्द जी व अन्य अनेक स्थानों पर भी ऋषि बलिदान दिवस पर लोगों को आर्यों के निर्माण के लिए ऋषि की आकांक्षा के अनुरूप कार्य करने का आह्वान किया गया तो हजारों आर्यों द्वारा ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढाने का संकल्प लिया।

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :- krinvantovishwaryam@gmail.com पर भेंजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

संध्या काल

मार्गशीर्ष मास, हेमंत ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(07 नवम्बर 2014 से 06 दिसम्बर 2014)
प्रातः कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)

पौष मास, शिशिर ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(07 दिसम्बर 2014 से 05 जनवरी 2015)
प्रातः कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)

ऋषि दयानन्द-ऋषि परम्परा के अन्तिम उत्तराधिकारी

-आर्य रमेश रोहिल्ला, नांगलोई

ऋषि ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानन्द तक ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद का प्रचार होता रहा। महाभारत युद्ध के बाद से ऋषि दयानन्द से पहले तक यह रुक गया था। महाभारत काल में वेदों के विद्वान, आचार्य व बलशाली योद्धा मारे गए। इसके बाद पाखण्ड का दौर प्रारम्भ हुआ। क्योंकि वेद लुप्त प्राय: हो गए थे। पाखण्डियों द्वारा वेद मन्त्रों के मनमाने अर्थ किए गये जिससे अनर्थ होने से पाप व अत्याचार बढ़ने लगा। लोग सनातन आर्य परम्परा को भूलकर अंधविश्वासों में फँसकर रह गए। धर्म की बहुत क्षति हुई। अधर्म को ही धर्म बना दिया गया। जैसा कि मुस्लमानों को कुरान में इस्लाम के नाम पर काफिरों का वध करना ही धर्म बना दिया गया है। धर्म से विमुख होकर मनुष्य अपने कर्तव्य से भी विमुख हो गया। जिसका नतीजा मुसलमानों की गुलामी हुआ। मुस्लिम आक्रांताओं ने भारत (आर्यावर्त) की पवित्र भूमि पर आधिपत्य जमा लिया और देश का इस्लामीकरण प्रारम्भ हो गया। हिन्दुओं के पूजा स्थलों को ध्वस्त किया जाने लगा तथा मन्दिरों की जगह मस्जिदों का जाल फैला दिया गया। हिन्दुओं की बहन-बेटियों की इज्जत लूटी जाने लगी तथा जबरन मुसलमान बनाया जाने लगा। जो विरोध करते थे उनको मौत के घाट उतार दिया जाता **जैसे- वीर हकीकत राय, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविन्द सिंह व अन्य बहुत मुस्लिमों के हाथों कत्ल कर दिये गए।** मुगलों ने बचे-खुचे हिन्दू राजाओं को अपना गुलाम बना लिया था जो मुगल बादशाहों की जी हजूरी में लगे रहते थे तथा मुगल बादशाहों की तरह ही अय्यास हो गए थे।

ब्रिटेन की ईस्ट इण्डिया कम्पनी व्यापार के बहाने भारतवर्ष (आर्यावर्त) में आई तथा धीरे-धीरे व्यापार के साथ-साथ सत्ता पर भी अपनी पकड़ बना ली। ईस्वी सन् 1600 में आए अंग्रोजों ने सम्पूर्ण भारत वर्ष (आर्यावर्त) को अपने कब्जे में ले लिया। अब आधिपत्य जमाने के बाद विरोध करने वालों पर जुल्म ढ़ाने शुरु कर दिए। देशभक्तों ने स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतू आन्दोलन किए तथा ईस्वी सन् 1857 में आजादी का बिगुल बजाया। बहुत बड़ी क्रांति हुई लेकिन कुछ गद्दारों के कारण ये आन्दोलन सफल न हो सका। अण्डेमान-निकोबार द्वीप समूह के सुदूर द्वीप ब्लेयर में अंग्रेजों द्वारा एक जेल का निर्माण करवाया गया। वीर क्रांतिकारियों को उस काला पानी जेल में कैद करके रखा गया। वहाँ जेल में कैदियों को कड़ा परिश्रम करने की सजा दी जाती थी। नारियल से 20 किलो तेल हाथ द्वारा खींचे जाने वाले कोल्हू से निकालना होता था। पूरा तेल न निकालने पर कोड़े बरसाये जाते थे। जेल में वीर सावरकर का मनोबल तोड़ने के लिए दूसरी मंजिल की आखिरी कोठरी में कैद किया गया था तथा कोठरी के गेट पर ताला लगाया जाता तथा बरामदे में दूसरा लोहे का गेट लगा कर वहां ताला लगाया जाता था। वीर सावरकर की कोठरी के ठीक सामने फांसी घर बनाया गया जहाँ एक साथ 3 देशभक्त-क्रांतिकारियों को एक ही झटके में फंसी दी जाती थी। पर वीर सावरकर ने बताया था कि देशभक्ति की प्रेरणा हमें ऋषि दयानन्द जी से मिली है। **ऋषि दयानन्द जी से प्रेरणा पाकर अनेक देशभक्त-क्रांतिकारी-शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, ठा. रोशन सिंह, पं. लेखराम जैसे क्रांतिकारियों ने आजादी की बलिवेदी पर हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहूति दे दी।**

ऋषि दयानन्द जी वास्तव में आदि सुष्टि से लेकर अब तक हुए सभी ऋषियों के सच्चे उत्तराधिकारी हुए हैं। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी और धर्मसंस्थापक श्रीकृष्णचन्द्र जी तथा यहाँ तक कि आदि शंकराचार्य जी के विचारों से अवगत् कराने का महान कार्य ऋषि दयानन्द जी ने बहुत लगनशीलता से किया। ईश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में चारों वेदों- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान चार ऋषियों- अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा को प्रदान किया। उसके बाद ब्रह्मा को, महाराज मनु आदि अनेक ऋषियों को प्राप्त हुआ। तथा सृष्टि क्रम से वेद ज्ञान महर्षि पतंजली, महर्षि कपिल, महर्षि कणााद, महर्षि वेद व्यास, महर्षि याज्ञवल्कय, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि जैमिनी, महर्षि गौतम व महर्षि विश्वामित्र आदि अनेकों ऋषियों व राजऋषियों ने वेद का प्रचार व प्रसार अपने-अपने तरीकों से किया। वेद ज्ञान के उपदेश व्याख्यान-प्रवचनों आदि से वेदों का प्रसार व रक्षा हुई। ऋषियों से शिक्षा ग्रहण करने वाले श्रीरामचन्द्र व श्रीकृष्णचन्द्र जी के जीवन पर वेद विद्या की गहरी छाप दिखाई पड़ती है। इसी प्रकार से ऋषि दयानन्द ने भिन्न-भिन्न मठों व पौराणिक ग्रन्थों से सत्य सनातन शाश्वत ज्ञान प्राप्त न होने पर मथुरा में दण्डी स्वामी विरजानन्द जी से वेदों का सच्चा ज्ञान प्राप्त किया। उनके समय में वेदों का ज्ञान विलुप्ति के कगार पर था। वेदों के असत्य, अज्ञानपूर्ण मिथ्या अर्थ स्वार्थी पण्डितों द्वारा जन सामान्य को सुनाए जा रहे थे। पण्डित भी भ्रम में पड़े हुए थे तथा आज भी भ्रम में हैं, जो मिथ्या ज्ञान समाज में मूर्ति पूजा, फलितज्योतिष, अवतारवाद, जन्म के आधार पर भेदभाव, सामाजिक विषमताओं को बढ़ावा दे रहे थे तथा आज भी वैसा ही कुछ प्रचलन में है जिसे स्वार्थ के वशीभूत होकर किया जा रहा है। ईश्वर है या नहीं? ईश्वर करता क्या है? ये सृष्टि कैसे बनी? किसने बनाई? मौत क्या है? क्या इससे बचने का कोई उपाय है? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर ऋषि-मुनियों की संस्कृति व वेद ज्ञान के लोप होने के कारण, किसी को नहीं सूझ रहा था। ऋषि दयानन्द जी ने इन सभी प्रश्नों का उत्तर गुरु विरजानन्द जी से प्रदत्त ज्ञान व उस समय के बड़े-बड़े विद्वानों, योगियों से सम्पर्क कर उत्तर प्राप्त किए तथा स्वयं अनुसंधान कर खोजने में सफलता प्राप्त की। शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त गुरु विरजानन्द जी द्वारा अपने सच्चे शिष्य दयानन्द से गुरु दक्षिणा के रूप में वेद के सच्चे ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए उनका जीवन माँग लिया गया, जिसे दयानन्द ने गुरु दक्षिणा के रूप में सहर्ष समर्पित कर दिया। आजीवन ब्रह्मचारी रहकर असत्य व अज्ञान पर आधारित मान्यताओं, कर्मकाण्डों तथा क्रियाकलापों के विरुद्ध लड़ने का संकल्प कर लिया। वेद विरुद्ध तथा असत्य धारणाओं जैसे अवतारवाद, मूर्तिपूजा व अन्य कर्मकाण्डों पर कुठाराघात करना शुरू कर दिया। इसके साथ-साथ वेद सम्मत् सत्य बातों को अपने प्रवचनों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाना जारी रखा। मूर्ति पूजा का खण्डन करते थे तो उस समय के विद्वान् पण्डे-पुजारियों से उन्हें धमकियां भी मिलनी शुरु हो गई जिसकी उन्होंने कभी परवाह नहीं की। उन्होंने अनेकों बार शास्त्रार्थ में पौराणिकों को मात दी। मूर्तिपूजा पर काशी के 33 पण्डितों को अकेले ने शास्त्रार्थ में हराया। काशी के पण्डित मिलकर भी मूर्तिपूजा को वेद सम्मत, बुद्धि ज्ञान सम्मत व मनुष्य के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं कर सके। ऋषि दयानन्द जी ने अपने जीवनकाल में वह कार्य कर दिखाया जिसे सृष्टि के आरम्भ से लेकर कोई ऋषि-मुनि आज तक भी नहीं कर पाये। उनकी मातृ भाषा हिन्दी न होने पर भी अपने सभी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, गौकरुणानिधि, वेदभाष्य आदि हिन्दी (आर्य) भाषा में लिखे। अपने सभी ग्रन्थों को हिन्दी भाषा में लिखकर उन्होंने वैदिक सिद्धांतों व अनेक लुप्तप्राय: रहस्यों को जन-जन तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया, जिसे ऋषि दयानन्द के जीवन काल तक किसी विद्वान व ऋषि-मुनी ने नहीं किया। हिन्दी भाषा में ग्रन्थों की व्याख्या होने के कारण देश (आर्यावर्त) व विश्व के लोग वेदों के गहन विचारों को सरलता पूर्वक समझने लगे जिससे काफी हद तक अज्ञान का अंधकार मिट कर सत्य ज्ञान का प्रकाश हुआ। ऋषि दयानन्द जी ने योग की सरल विधि समझाई और एक ईश्वर को ही उपासना के योग्य बताया। उन्होंने वैदिक संध्या नामक ग्रन्थ की रचना कि जिसमें ईश्वर की उपासना की विधि बताई जिसके अनुसार आचरण कर मनुष्य मोक्ष की पदवी तक प्राप्त कर सकता है। अग्निहोत्र जो उस समय लुप्त प्राय: या अशुद्ध पद्धति, अज्ञानता तथा उद्देश्यहीन कर्मकाण्डों का मिश्रण हो गया था, उसको भी ऋषि दयानन्द जी ने साधारण मनुष्यों के लिए वेद आधारित सत्यज्ञानानुसार सरलतम रूप में समझाया। इसी प्रकार पंचमहायज्ञों व अन्य विशिष्ट यज्ञों की विधि का प्रकाश भी अपने ग्रन्थों में किया, जिससे उनकी अद्वितीय प्रतिभा के कारण वेदों का दुर्लभ ज्ञान सर्वसाधारण को उपलब्ध हो सका।

ऋषि दयानन्द जी ने ईस्वी सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना वेद के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने व आर्यों को वेद प्रचार का एक साझा मंच उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से की । उन्होंने तथा उनके अनुयायियों द्वारा जगह-जगह गुरुकुल तथा पाठशालाएं खोलकर वेदाध्ययन समाज के सभी वर्गों के लिए बिना किसी भेदभाव के सुनिश्चित किया जिससे ब्राह्मणेत्तर जातियों से भी बड़े-बड़े विद्वान तथा भाष्यकार हुए जिनमें से कुछ विद्वानों जैसे पं0 ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं0 युद्धिष्ठर मीमांसक व डॉ0 आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी को वेदों की विद्वता के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। ऋषि दयानन्द जी ने ईश्वरीय वेद ज्ञान के अनुसार जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डाला। आज गायत्री मंत्र का घर-घर में पाठ हो रहा है इसका सर्व प्रथम प्रचार-प्रसार ऋषि दयानन्द जी ने ही किया। ऋषि जी ने लुप्त वेदों को खोजकर उनके सत्य व यथार्थ अर्थ हिन्दी (आर्य भाषा) ग्रन्थों की रचना कर एतिहासिक कार्य किया।

शेष पृष्ठ 6 पर

पूर्वांचल में आर्य निर्माण कार्य

उतरप्रदेश प्रान्त के पूर्वी क्षेत्र पूर्वांचल में **राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा** द्वारा वेद विद्या का प्रचार-प्रसार चल रहा है। पूर्वांचल क्षेत्र में भी वेद विद्या का प्रचार-प्रसार आचार्य इन्द्रबन्धु शास्त्री व आर्य अशोक त्रिपाठी के सहयोग से हो रहा है। वेद विद्या को आत्मसात् करने के पश्चात् पूर्वांचल के जनमानस के मनोमस्तिष्क में एक नई उर्जा का संचार देखने को मिल रहा है। पूर्वांचल का जनमानस/युवावर्ग वेद विद्या को आत्मसात् करने के पश्चात् **अपने श्रेष्ठ्पूर्वजों की भांति उच्च जीवन-उच्च विचार** को अपने जीवन में धारण करने का संकल्प ले रहा है। और अपने परिवार को, समाज को, राष्ट्र को वेद विद्या से अवगत् अर्थात् आत्मसात करवाने के लिए प्रयासरत हैं। और इस मानव जाति के जीवन को पीड़ित व आहत देखकर पूर्वांचल के जनमानस/युवावर्ग जो अपने आप को अब आर्य/आर्या मानने लगे हैं। निर्मात्री सभा के द्वारा आर्य निर्माण सत्रों का आयोजन किया जा रहा है। वाराणसी शहर में कई सत्र हो चुके हैं व इसी माह आजमगढ़ में भी सत्र का आयोजन होने जा रहा है। हम सब का प्रयास है कि यह निर्माण कार्य शीघ्रता से उस क्षेत्र में भी व्यापक हो।

धर्म का व्यवहारिक पक्ष

धर्म के व्यवहार पक्ष के अनुसार जिस-जिस कार्य से दूसरे की हानि होती है वह अधर्म तथा उपकार होता है तो वह धर्म होता है अर्थात् दूसरों को हानि पहुँचाने का कार्य अधर्म की श्रेणी में आता है और धर्म को व्यवहार से अलग नहीं किया जा सकता है। धर्म के सिद्धान्त सर्वतन्त्र सिद्धान्त होते हैं, धर्म सार्वजनिक व सार्वकालिक होता है। वह सबके लिए एक समान होता है। जब धर्म सबके लिए एक ही होता है तो वह होता भी एक ही है। क्योंकि मनुष्य मात्र का आधार एक ही है। सारे मनुष्य एक ही जाति में सम्मिलित होते हैं, सभी मनुष्यों की उत्पत्ति एक ही प्रकार से होती है। जो मानवोचित गुण हैं वही धर्म का अंग होते हैं, जिन के बिना मनुष्य, मनुष्य न रहकर पशुवत् हो जाता है वही धर्म कहलाता है। यह सभी मनुष्यों के लिए एक समान है।

मनुष्य अल्पज्ञ एवं अल्प सामर्थ्य वाला है वह अल्पज्ञता के कारण करणीय एवं अकरणीय का पूर्ण रूपेण निश्चय नहीं कर सकता है, यदि वह वर्तमान ज्ञान के कारण निश्चय करना चाहे भी तो परीक्षणों में ही जीवन एवं सामर्थ्य व्यतीत हो जावेगा, जब यह संचित ज्ञान वह अगली पीढ़ी को दे पायेगा तब तक परिस्थितियाँ परिवर्तित हो चुकी होंगी। तब उसे अर्थात् अगली पीढ़ी को पुनः परीक्षणों से ही गुजरना होगा और पुनः यही प्रक्रिया दोहरायी जायेगी। अतः कभी भी स्वज्ञान मात्र से निर्भ्रान्तता एवं लक्ष्य की उपलब्धि नहीं हो पायेगी, इसलिए सृष्टि एवं शरीर निर्माता के ज्ञान एवं विधान का आश्रय लेना ही होगा, लक्ष्य भी उसी ने निर्धारित किया है और उपायों का वेद में दिग्दर्शन भी उसी ने दिया है।

-साभार, आर्ष कर्मविधि की भूमिका से।

देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तब आर्य्यावर्त्त व अन्य भूगोल-देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्त्तते थे। क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न, रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गो आदि पशुओं के मारनेवाले मद्याहारी राज्याऽधिकारी हुए हैं, तब से क्रमशः आर्य्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है। क्योंकि -**नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्।**
जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो फल-फूल कहाँ से हों?

-ऋषि दयानन्द

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना एस.एम.एस. द्वारा आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ कम से कम एक माह पहले निर्धारित करके सभा के महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी से अनुमति ले लें, जिससे उनकी सूचना भी पत्रिका में दी जा सके।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्र

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्क	दूरभाष
1.	आजमगढ़, उ.प्र.	08-09 नबम्बर	आर्य नरेन्द्र	9936591235
			आर्य राजीव	9415831017
2.	संजयपुरी, मोदीनगर, गाजियाबाद, उ.प्र.	08-09 नवम्बर	आर्य नारायण	9758403646
3.	आर्यसमाज टटीरी बागपत, उ.प्र.	08-09 नवम्बर	आर्य सहदेव	9997283765
4.	रामलवास, भिवानी, हरियाणा	08-09 नवम्बर	आर्य भुपेन्द्र	9991106631
5.	उचाना, जीन्द, हरियाणा	08-09 नवम्बर	आर्य जयवीर	9416874412
6.	गांव बधाई, चरथावल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.	15-16 नवम्बर	आर्य आकाश	8881366756
7.	आचार्य महाविद्यालय, चित्तौड़ा झाल, मुजफ्फरनगर, उ० प्र०	15-16 नवम्बर	आर्य नरेन्द्र	9719940999
8.	हरियाणा शक्ति स्कूल कंझावला, दिल्ली	15-16 नवम्बर	आर्य कुलदीप जौन्ती	9911504848
9.	ओ. पी. एस. विद्यामन्दिर, करनाल, हरियाणा	22-23 नवम्बर	आर्य राजकुमार	9416364874
10.	जसोरखेड़ी, झज्जर, हरियाणा	29-30 नवम्बर	आर्य सुनील	9812629815
	आर्या प्रशिक्षण सत्र			
1.	राजकीय माध्यमिक विद्यालय, गुलकनी, जीन्द, हरियाणा	08-09 नवम्बर	आर्य मुकेश	8053228443

विद्यार्थी जीवन में स्वाध्याय का महत्त्व

-दीक्षिका आर्या 'बाजीतपुर' दिल्ली

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात् पशुपुच्छविषाणहीनः
तृणं न खाद्यान्यपि जीवमानं तदभागदेय परम् पशुनाम्।

अर्थात् जिसे साहित्य, संगीत और कला (किसी अन्य शिक्षा या तकनीकी विषय में निपुण) में से किसी का भी ज्ञान नहीं है, वह साक्षात बिना पूँछ और सींग के पशुओं के समान है। और एक विद्यार्थी जो साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ता है, उसके लिए तो स्वाध्यायी होना अत्यंत आवश्यक है।

स्वाध्याय क्या है? स्वाध्याय का अर्थ है- सु+अध्याय अर्थात् अच्छा अध्ययन, स्वाध्याय का अर्थ है- स्व अध्ययन अर्थात् अपना अध्ययन, ईश्वर का अध्ययन और विद्यार्थी जीवन में सिर्फ दो वस्तुओं का ही विशेष महत्व होता है एक स्वास्थ्य का और दूसरा स्वाध्याय का। स्वाध्याय का अर्थ अध्ययन है अर्थात् हम अच्छा पढ़ें और पहले अपना साहित्य (ईश्वर प्रदत् वेदादि के अनुकूल साहित्य) पढ़ें और एक विद्यार्थी जो स्वाध्याय करता है उसे कैसा होना चाहिए संस्कृत में एक श्लोक आता है जिसमें एक आदर्श विद्यार्थी के गुण, कर्म, स्वभाव बताए गए हैं-**काक चेष्टा बकोध्यानं श्वान निद्रा तथैव च। अल्पाहारी च ग्रहत्यागी विद्यार्थी एते पंच लक्षणम्।** काक चेष्टा अर्थात कौवे जैसी इच्छा, जानने की रूचि/चेष्टा और बगुले जैसा ध्यान- जिस प्रकार एक विद्यार्थी का मन भी एकाग्र होना चाहिए, श्वान निद्रा अर्थात् श्वान (कुत्ता) जैसी नींद- जिस प्रकार कुत्ते की होती है जो थोड़ी सी आहट पर ही जाग जाता है, उसी प्रकार एक विद्यार्थी को भी आलस्य/निद्रा में नहीं होना चाहिए, और एक विद्यार्थी को थोड़ा खाने वाला होना चाहिए, ग्रहत्यागी अर्थात् विद्या अर्जित करने वाले को यदि आवश्यकता पड़ने पर घर का भी त्याग करना पड़े तो उसे निःसंकोच विद्या और ज्ञान की प्राप्ति के लिए घर छोड़ देना चाहिए। इसके अलावा एक स्वाध्यायी विद्यार्थी में कई गुण होते हैं- वह कूपमण्डूकता के दोष से परे होता है अर्थात् जिस प्रकार एक मेण्डक अपने जन्म से मृत्यु पर्यन्त पूरा जीवन उसी एक ही कुएँ में बिता देता है ये एक दोष है, एक स्वाध्यायी व्यक्ति या बालक-बालिका विद्यार्थी कभी भी अपनी विद्या को संकुचित नहीं रखता, बल्कि निरंतर उसे विस्तृत करता जाता है। इसलिए साहित्य के लिए स्वाध्याय का विशेष महत्त्व है और स्वाध्याय तभी संभव है जब स्वस्थ शरीर हो, और स्वस्थ शरीर तभी होगा जब हमारा भोजन ऋतु के अनुसार (ऋतुभुक), मात्रा के अनुसार (मितभुक) होगा और हितकारी (हितभुक) होगा।

आर्यसमाज विशाखा एन्कलेव, दिल्ली का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज विशाखा एन्कलेव पी. यू. ब्लाक, उत्तरी पीतमपूरा, दिल्ली-34, के 27 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य समाज विशाखा एन्कलेव में वेद-प्रचार कार्यक्रम का आयोजन 06 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 2014 को किया गया, जिसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्य धूमसिंह शास्त्री जी रहे, प्रवचन कर्ता- आचार्य संजीव जी (मुजफ्फरनगर) एवं भजनोपदेशक आर्य कुलदीप विद्यार्थी जी (बिजनौर) रहे। आर्य जगत के इन विद्वत्जनों ने ईश्वर की आज्ञानुसार वेदानुकुल सैकड़ों आर्य-आर्याओं को सत्यपथिक बनने का संदेश दिया। कार्यक्रम के समापन पर मुख्य वक्ता- आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान परम श्रद्धेय आचार्य श्री परमदेव जी मीमांसक रहे और मुख्य अतिथि रहे भूतपूर्व मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल। परम श्रद्धेय आचार्य श्री ने अपने उदबोधन में समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य-आर्याओं से एक होने का आह्वान किया। आर्य-आर्याओं से आचार्य श्री ने कहा कि आप अपने कर्तव्य का निर्वाहन करें और अपने राष्ट्र को पुनः गौरवशाली बनायें। वर्तमान में अगर कोई इस समाज और राष्ट्र का हितैषी है तो वह आप आर्य-आर्या ही वास्तविक हितैषी हैं, केवल मानव मात्र के ही नहीं अपितु प्राणि मात्र का एकमात्र हितैषी आज केवल और केवल आर्य-आर्या ही हैं। कार्यक्रम में आर्यसमाज के सभी अधिकारियों व सदस्यों का विशेष सहयोग रहा।

पृष्ठ 4 का शेष

विदेशी तथा देशी हस्तियां भी ऋषि दयानन्द जी की विद्वता का लोहा मानती थी। विदेशी विद्ववान प्रो0 फ्रैडरिक मैक्समूलर, सन्त रोमारोलां, कर्नल अल्काट, मैडम बैलेबेटस्की, पादरी स्काट, योगी अरविन्द, दादा भाई नारौजी, देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस व सर सैयद अहमद खान, वीर सावरकर आदि अनेकानेक हस्तियाँ उनके कार्य तथा व्यक्तित्व की प्रशंसक थी। सत्यार्थ प्रकाश जैसा कालजयी अमर ग्रन्थ लिखकर ऋषि दयानन्द अमर हो गए। सत्यार्थ प्रकाश में वेदमतानुसार ईश्वर व मानव जीवन को प्रभावित करने वाली प्रत्येक व्यवस्था का वर्णन किया है जिसके अनुसार आचरण कर मनुष्य लौकिक व परलौकिक जीवन को सफल बना सकता है। सत्यार्थ प्रकाश से अर्जित ज्ञान से मनुष्य ईश्वर का सच्चा स्वरुप, जीवात्मा तथा प्रकृति के सत्य स्वरुप सरलतापूर्वक समझ सकता है। विभिन्न मत-मतांतरों के कारण ईश्वर के विषय में फैलाई गई भ्रांतियों का निवारण भी ऋषि ने इस ग्रन्थ में किया है। हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि धर्मों में आई अनावश्यक कुरीतियों से भी ऋषि ने मानव मात्र को आगाह किया है। सत्यार्थ प्रकाश ऋषि दयानन्द जी का अमर ग्रन्थ है। प्रत्येक सुधीजन को इसका अध्ययन करना चाहिए।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर ऋषि-मुनियों द्वारा वेदों की स्थापना व प्रचार-प्रसार किया गया। ऋषि दयानन्द जी ने भी अपने जीवन काल में (ईस्वी सन् 1825 से ईस्वी सन् 1883 तक) वेद मत को पुनर्जीवित किया। यह एक कठिन समय था। जैसा कि शुरू में बताया गया है कि महाभारत (पारिवारिक स्वार्थ) युद्ध के बाद सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो गया। जैन व बौद्ध मतों का उदय हुआ जो ईश्वर का अस्तित्व ही स्वीकार नहीं करते। बौद्ध व जैन मतों के द्वारा फैलाई जा रही नास्तिकता को समाप्त करने के लिए आदि शंकराचार्य ने अद्वैतमत का प्रचार किया, जिसमें उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को महत्व दिया तथा बताया कि जो सृष्टि हमें दिखाई देती है इसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है यह तो ईश्वर की माया है एवं उसी के अन्तर्गत है। जीवात्मा अर्थात् मनुष्यों एवं प्राणियों की आत्माओं को उन्होंने ईश्वर का अंश बताकर उसे भी ईश्वर में सम्मिलित माना। बौद्ध व जैनियों से हुए शास्त्रार्थ में शंकराचार्य जी की विजय हुई, जिससे इन दोनों सम्प्रदायों का ईश्वर की सत्ता न होने का सिद्धांत कट गया। ऋषि दयानन्द जी ने शंकराचार्य जी के मत को पूर्णः रूप से अमान्य नहीं किया अपितु कहा कि ईश्वर का अस्तित्व है! परन्तु जीव का भी अपना अलग अस्तित्व है। प्रकृति का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है। परन्तु वह जड़, निर्जीव पदार्थ है और ईश्वर के वश में है। इसी प्रकार ऋषि दयानन्द जी ने जीवात्मा को ईश्वर का अंश स्वीकार न कर उसे पृथक अनादि, नित्य, अजन्मा व अमर पदार्थ स्वीकार कर वेद सम्मत (तर्क पूर्ण) प्रमाणों से सिद्ध भी किया। इस प्रकार उन्होंने शंकराचार्य जी के अद्वैतवाद को स्वीकार करते हुए त्रैतवाद के सिद्धांत को स्थापित किया। जिसे किसी अद्वैतवादी ने मौखिक या लिखित चुनौती नहीं दी। जिससे त्रैतवाद सिद्धांत यानि ईश्वर, जीव और प्रकृति अनादि, अमर तथा पृथक सत्ता वाले हैं, अपनी पूर्ण सत्यता के साथ संसार में विद्यमान और प्रचलित हैं। यदि आज आदि शंकराचार्य जीवित होते तो ऋषि दयानन्द जी द्वारा प्रतिपादित त्रैतवाद के सिद्धांत को अवश्य मान्यता प्रदान करते तथा कहते कि मैंने जिस अद्वैतवाद सिद्धांत की स्थापना (वैदिक) धर्म की रक्षा बौद्धों तथा जैनियों की नास्तिकता से बचाने के उद्देश्य से की थी आज उनका ही मत सुधार कर ऋषि दयानन्द जी ने त्रेतवाद के रूप में किया है अतः यह उनके अनुवर्ती ही हैं विरोधी नहीं। ऐसे अनेकानेक उदाहरण हैं जिनके अनुसार ऋषि दयानन्द जी ने वेदों की आज्ञा का पालन स्वयं किया तथा वेदों के ज्ञान को जनसाधारण को उपलब्ध करवाया। यही तो वेदों की आज्ञा है सत्य विद्या की वृद्धि तथा असत्य अविद्या का ह्रास करना प्रत्येक व्यक्ति का परम धर्म होना चाहिए। उनकी शिक्षाओं का लाभ उठाकर कोई भी मनुष्य अपना तथा संसार का कल्याण करने में सक्षम हो सकता है। ऋषि दयानन्द जी ने मानवता के उत्थान के लिए जितना प्रयत्न किया उतना कार्य (पुरुषार्थ) किसी अन्य द्वारा नहीं किया गया। इसी कारण वह अन्तिम ऋषि हुए हैं। आइए उनके द्वारा रचित आर्ष ग्रन्थों से ज्ञानार्जन कर अपना जीवन सफल बनाएँ और अपने साथ-साथ प्राणी मात्र को सुखी रखें।

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

आज दिनांक 19-10-14 को गांव करावला चौपाल नजदीक (भगत सिंह पार्क) में यह सत्र सम्पन्न हुआ। इस सत्र में सम्मिलित होकर मैंने बहुत ज्यादा शिक्षा ग्रहण की है। मुझे ये पता था कि ईश्वर है किन्तु ईश्वर के बारे में पूर्ण ज्ञान नहीं था, जो अब मिला। इसमें मैंने ईश्वर और उसके सत्य के बारे में जाना मैंने अपने धर्म के बारे में सही ढ़ग से जाना। मेरा सत्र में भाग लेकर बहुत संतुष्ट है। मैं अपने व्यसनों के कारण स्वयं दु:खी था। अब मुझे उनसे लड़ने में सहायता और मार्गदर्शन मिला है।

अब मैं भी एक आर्य बनकर आर्य समाज में जैसा सम्भव होगा वैसा सहयोग करूंगा एवं अपने राष्ट्र के प्रति सजग रहूंगा। मेरा बहुत-बहुत धन्यवाद आचार्य जितेन्द्र जी को उन्होंने मुझे जीवन का सही महत्व और मार्गदर्शन दिया।

रवि कादयान, आयु-26 वर्ष, योग्यता-10+2
कार्य-मजदूरी, गांव कटेवड़ा, दिल्ली

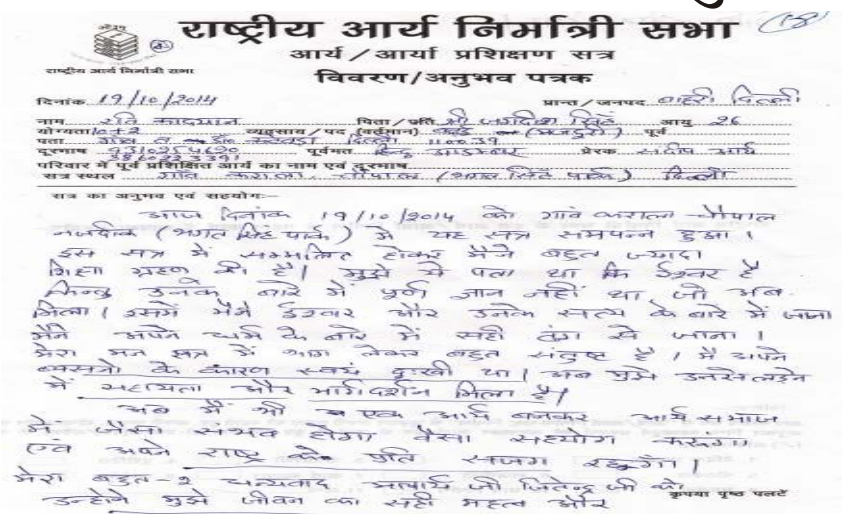

सत्र का अनुभव बहुत अच्छा रहा क्योंकि बहुत कुछ धर्म के सबंध में मुझे जानकारी नहीं थी, लेकिन आज ऐसा महसूस हो रहा है कि मैं सोया हुआ था, अब जाग चुका हूँ। मैं देश व समाज सेवा करने के लिए तैयार हूँ। हमारे विचार से अगर आर्यावर्त का निर्माण हो गया तो इससे बड़ी देश में एकता और कोई नहीं हो सकती। यह एक बहुत बड़ा अच्छा अभियान है, इस अभियान के संचालन करने वाले लोगों को शत्-शत् प्रणाम करता हूँ।

मुझसे जो सहयोग होगा, मैं इस समाज को आगे बढ़ाने के लिए समय-समय पर देता रहूंगा, बशर्ते हम आपसे और प्रशिक्षण की आशा करते हैं।

जयशंकर प्रसाद मौर्या, आयु-54 वर्ष, योग्यता-एम.ए
कार्य-प्रोपर्टी डीलर, गांव गौरा कलाँ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

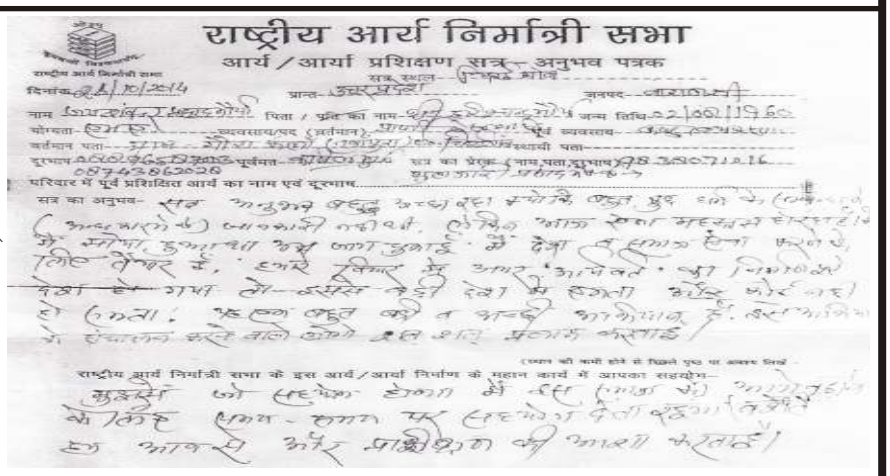

आज इस सत्र में आने से मुझे वेद शास्त्र व इनकी नीतियों के बारे में कुछ जानकारी हुई, तथा आर्य समाज के बारे में समझ आया कि वे तन-मन व धन से राष्ट्र की सेवा करने में समर्थ हैं। अब मेरे अन्दर भी नए विचारों का संचार हुआ। यदि मैं सत्र में शामिल नहीं होता तो शायद वेद के बारे में कभी विचार नहीं करता। यहां आने के बाद मुझे अपने कर्तव्यों तथा राष्ट्र के बारे में पता चला। आज मैं अपने आपको अन्दर से मजबूत मान रहा हूँ। मैं आर्यसमाज की विचारधारा का सम्मान करता हूँ।

उमेद सिंह, आयु-31वर्ष, योग्यता-एम.सी.ए.
कार्य-अध्यापक, वत्स कलोनी, बहादूरगढ़, हरियाणा

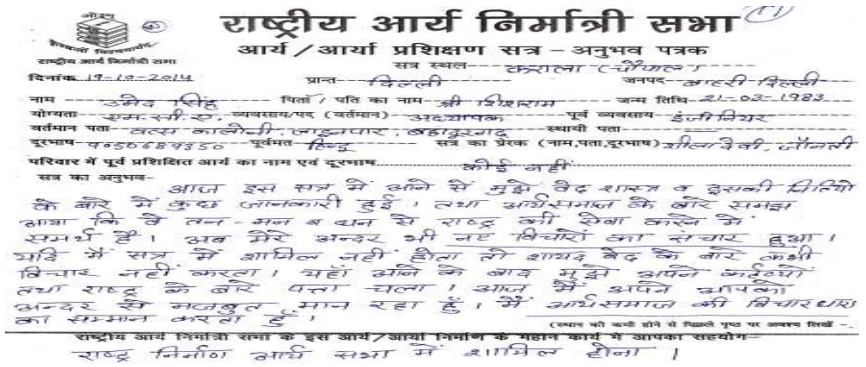

यहां पर आकर मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं अपने जीवन में एक ऐसा ही रास्ता सोचता था वो मुझे यहां पर आकर मिला, इससे पहले मैं राधा स्वामी, आर. एस. एस. से भी जुडा हूँ, उनसे भी मुझे काफी लाभ मिला है। मुझे इतना तो पता है कि मैंने धरती पर जन्म व्यर्थ में नहीं लिया है, किसी महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए लिया है और इस सत्र से मुझे लग रहा है कि यही वो कार्य है, जिसके लिए मैंने जन्म लिया है।

अभी मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है पर मैं आपके साथ हूं, मैं अपने कार्य और शिक्षा में ज्यादा व्यस्त रहता हूँ, पर फिर भी जो मुझसे होगा मैं वो करूंगा, मैं आपके साथ हर प्रकार से जुड़ा रहूंगा। पहले जो मुझे नॉलेज थी वो क्लियर नहीं थी पर यहां पर आने के बाद वो नॉलेज पूरी हुई है। लेकिन मैं अभी भी ये मानता हूँ कि मुझे अभी भी बहुत कुछ सीखने की जरूरत है। आज मुझे अपने राष्ट्र की सेवा का मौका मिला है, जिसे मैं बिल्कुल नहीं गवाऊंगा। पहले मुझे यही लगता था कि जो लोग आर्मी, ऐयर फोर्स, नेवी में होते हैं, वही देश की रक्षा करते हैं, और जिनके पास पैसे होते हैं वही सहयोग करते हैं? अब मुझे पता लगा कि मैं भी अपने देश के लिए कुछ कर सकता हूँ।

यहां पर सबसे अच्छी बात यह लगी कि जो समाज में कहावतें बनाई हुई हैं, वो गलत तो मुझे पहले से ही लगती थी, पर आज जब सब समस्याओं का समाधान हुआ तो अच्छा भी लगा कि भगवान ने दिमाग में आने वाले शुद्ध विचारों को पूरा करने के लिए भी कुछ नियम बताए हुए हैं। मैं यहां से अपनी जिदंगी की सबसे अनमोल शिक्षा लेकर जा रहा हूँ। आज से मैं भी आर्य हूँ।

राम गोपाल, आयु-24 वर्ष, योग्यता-एम.सी.ए.
कार्य-नौकरी, सीताराम गेट, झज्जर, हरियाणा

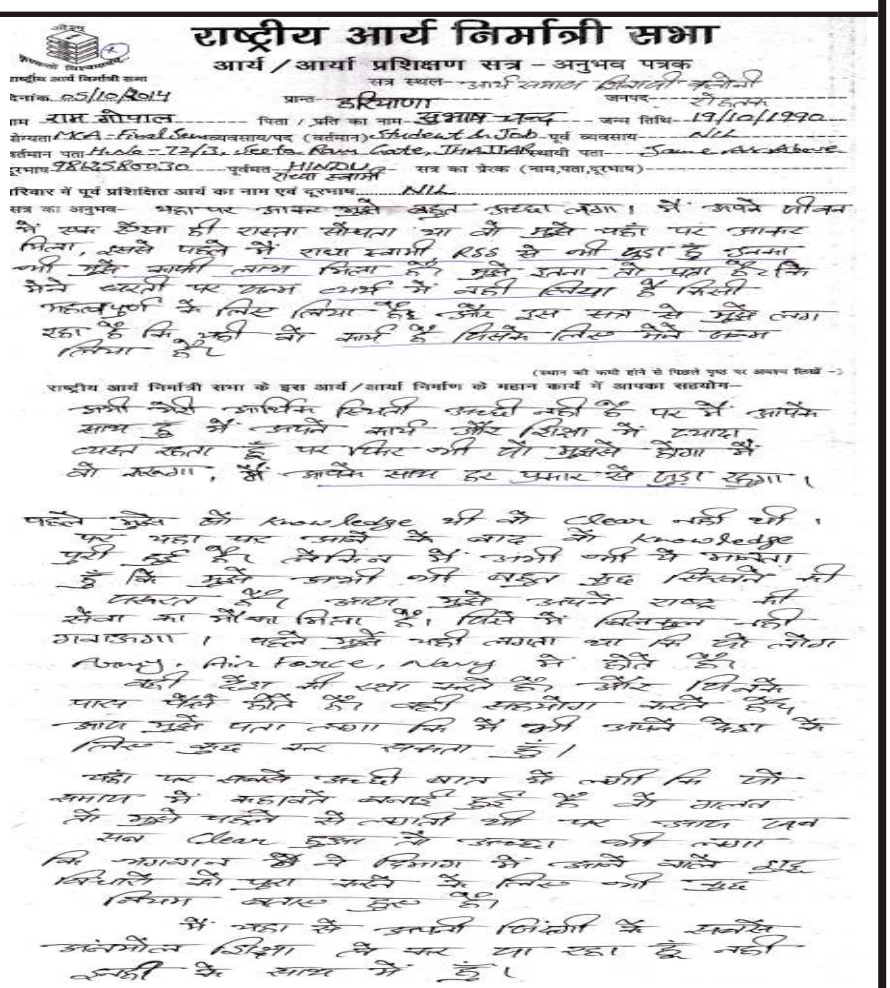

आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16

आर्य निर्माण राष्ट्र निर्माण

जनपदीय आर्य सम्मेलन व गुरुकुल चित्तौड़ाझाल (नंगला कबीर) मुजफ्फरनगर का वार्षिकोत्सव (01-03 अक्टूबर)

ऋषि बलिदान दिवस (23 अक्टूबर) को कुरुक्षेत्र में आचार्य धर्मपाल जी व भजनोपदेशक विनोद दधीची

ऋषि बलिदान दिवस (23 अक्टूबर) को कंझावला दिल्ली में भव्य आयोजन

आर्य प्रशिक्षण सत्र (11-12 अक्टूबर) गाँव-बिठमड़ा, हिसार, हरियाणा में आचार्य धर्मपाल जी

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए द्विवार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।